# तुम ही हो प्राणों के गुंजन

मैं क्षण में जीने का पक्षपाती हूं। मत जीवन को लंबाने की चिंता करो, जीवन को गहराओ।

मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयः, न तु धूमायितं चिरम्।

क्या करोगे चिरकाल तक धुआं-धुआं होकर? चिरकाल से धुआं-धुआं ही तो होते रहे हो। अब तो चौंको, अब तो जागो! और तुम्हारे भीतर अग्नि छिपी है; वह सूत्र छिपा है जो तुम्हें उठा दे आकाश की आखिरी ऊंचाइयों तक। तुम्हारे भीतर परमात्मा का गीत छिपा है।

योग प्रीतम की यह कविता—

*ऐसा कोई गीत नहीं है, जिसमें तेरा राग नहीं हो*
*ऐसी कोई प्रीत न, जिसमें तेरा मदिर सुहाग नहीं हो*
*इस जीवन की अंधियारी में*
*पूर्ण चंद्र-से तुम खिल आए*
*इस जीवन के सूनेपन में*
*तुमने ये मधुमास जगाए*
*ऐसा रस बरसाया तुमने, जीवन नई बहार हो गया*
*ऐसा कोई फूल न, जिसमें तेरा मधुर पराग नहीं हो*
*ऐसा कोई गीत नहीं है, जिसमें तेरा राग नहीं हो*
*इस जीवन के हर नर्तन में*
*तेरी ही प्यारी रुनझुन है*
*इस जीवन में जो कीर्तन है*
*बस उसमें तेरी ही धुन है*
*तुम हो इस जीवन के मधुवन, तुम ही हो प्राणों के गुंजन*
*बिना तुम्हारे खेला जाए, ऐसा कोई फाग नहीं है*
*ऐसा कोई गीत नहीं है, जिसमें तेरा राग नहीं हो*
*ऐसी कोई प्रीत न, जिसमें तेरा मदिर सुहाग नहीं हो*
*मेरे भावाकुल अंतस में*
*शोभित है शृंगार तुम्हारा*
*मेरा यह संन्यास तुम्हारा*
*मेरा यह संसार तुम्हारा*
*मेरे मन के वृन्दावन में, निशि-दिन रास रचाते हो तुम*
*ऐसी कोई लगन नहीं है, जिसमें तेरी आग नहीं हो*
*तुम हो इस जीवन के मधुवन, तुम ही हो प्राणों के गुंजन*
*बिना तुम्हारे खेला जाए, ऐसा कोई फाग नहीं है*
*ऐसा कोई गीत नहीं है, जिसमें तेरा राग नहीं हो*

वह तो छिपा पड़ा है तुम्हारे भीतर। चित चकमक लागे नहीं! बस जरा चित को चकमक लगानी है, जरा सूखा करना है। जरा वासना की आर्द्रता कम करनी है। और फिर तुम एक क्षण में प्रज्वलित हो उठोगे।

— ***ओशो***
*पीवत रामरस लगी खुमारी*
*दूसरा प्रवचन*
*(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)*